# प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण

# का

# द्विवर्षीय पाठ्यक्रम आधारित नोट्स

## Year : 1st

## Paper : VII

# Subject : SANSKRIT

## Compiled & Edited by : Mrs. Teresa Panna


**PRIMARY TEACHERS EDUCATION COLLEGE**

Gurwa, P. O.- Sitagarha, Dist. – Hazaribag -825 303, Jharkhand, INDIA

(A Jesuit Christian Minority Institution)

**Recognized by ERC, NCTE vide order No. BR-E/E- 2/96/2799(12) dt 11.02.1997**

Phone No. 06546-222455, Email: ptecgurwa1997@rediffmail.com Website: www.ptecgurwa.org


PTEC GURWA, SITAGARHA, HAZARIBAG

## अनुक्रमणिका

## प्रथम वर्ष

## संस्कृत शिक्षण : विषयवस्तु सह शिक्षण विधि


**इकाई 1 – संस्कृत शिक्षण के उद्देश्य एवं महत्त्व**

- संस्कृत भाषा का सांस्कृतिक महत्व,
- संस्कृत भाषा का साहित्यिक महत्त्व ।

**इकाई 2 – संस्कृत शिक्षण का स्वरूप**

- संस्कृत की स्थिति,
- संस्कृत और नैतिक शिक्षा ।

**इकाई 6 – संस्कृत शिक्षण की विधियाँ**

- स्वरोच्चारण विधि
- अनुकरण विधि
- अभ्यास विधि
- प्रश्नोत्तर विधि


PTEC GURWA, SITAGARHA, HAZARIBAG

# इकाई — 1

## (संस्कृत शिक्षण के उद्देश्य एवं महत्त्व)

PTEC GURWA, SITAGARHA, HAZARIBAG

# सांस्कृतिक महत्व

**Q. संस्कृत भाषा के सांस्कृतिक महत्व पर प्रकाश डालें।**

संस्कृत भाषा को जहाँ संसार की प्राचीनतम भाषा कहलाने का गौरव प्राप्त है। वहाँ यह भारत की एक अमूल्य एवं अनुपम निधि भी है। भारतीय संस्कृति संस्कृत भाषा के माध्यम से ही अमर है। साथ ही संस्कृत सभी भारतीय आर्य भाषाओं की जननी भी है।

साहित्य ही किसी देश की संस्कृति रूपी सोने को परखने की कसौटी है। यही समाज का दर्पण है। ''संस्कृत शब्द का अर्थ है–संस्कार की हुई'', धोई हुई, शुद्ध किया हुआ। संस्कृत भाषा ही हमारी संस्कृति और सभ्यता का आदि स्रोत है। जिसका मूल उसके अपार साहित्य में निहित है।

संस्कार भारतीय संस्कृति की आत्मा है। हमारे सोलह (16) संस्कार संस्कृत भाषा में ही कराये जाते है। पूजा–पाठ, हवन, यज्ञ आदि सभी संस्कृत भाषा के माध्यम से ही होते है।

संस्कारों से आत्मा तथा अंतः करण की शुद्धि होती है। जिस प्रकार खान से निकले हुए सोने को अग्नि द्वारा शुद्ध किया जाता है, उसी प्रकार सांसारिक प्रपंचों मे माया मोह मे लिप्त अतःकरण को संस्कारों द्वारा शुद्ध किया जाता है। जिस प्रकार सोना, हीरा आदि निकालने पर उसमे चमक, प्रकाश तथा सौंदर्य के लिए उसे तपाकर, तराशकर उसको चिकना करना आवश्यक है उसी प्रकार मनुष्य को संस्कारवान बनाने के लिए, विधिवत् पूजा–पाठ संपन्न करना आवश्यक है। यह कार्य संस्कृत भाषा के माध्यम से ही होता है।

अभिवादन, आशीवाद, अंकमाल, आसन वार्तालाप आदि शिष्टाचार हैं और इन सबमें भारतीयता निहित है, जिनका एक मात्र आधार संस्कृत ही है। जब हम किसी को प्रणाम करते हैं तो हमारा यह प्रणाम इस बात का परिचायक होता है, कि हमने उस व्यक्ति की महानता स्वीकार कर ली है। हम अपने से बड़े के समक्ष पहुँचने पर नमस्कार, प्रणाम करते है। इसका अर्थ ही झुकना है। अर्थात् हम अपने से बड़े के समक्ष अपना शीश झुकाते हैं। हमारे आशीर्वाद भी सार्थक हाते हैं। जैसे– आयुष्मान भव, आयुष्मती भव, चिरंजीवी भवः आदि कहकर हम अभिवादन और आशीर्वाद दोनों को सफल कर देते है। हम अपने से बड़े को उच्च ''आसन'' देते है। अतिथि सत्कार, सामान्य वार्तालाप आदि सभी में सांस्कृतिक परंपराएँ निहित है। हमारे देश मे अतिथि के ईश्वर तुल्य माना गया है। ''अतिथि देवो भव '' इसी का परिचायक है।

भारतीय समाज व संस्कृति को प्रेरित करने वाले सभी अमृत वाक्य संस्कृत वाक्य से ही उद्‌बोधित होते है। जैसे :– असतो मा सद्‌गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय मृत्योर्मा अमृतं गमय।

भारत के उच्च कोटि क सांस्कृतिक विचार, आध्यात्मिक भाव, उच्च नैतिक मूल्य आदि संस्कृत भाषा में ही सुरक्षित है । जैसे– सर्वे भवन्तु सुखिनः, वसुधैव कुटुम्बकम् ..... आदि । हमारी संस्कृति में महापुरूषों को सर्वोच्च स्थान दिया गया है और कहा भी गया है – ''**महाजनो येन गता सः पन्थाः ।**''

संस्कृत के सांस्कृतिक महत्व पर प्रकाश डालते हुए डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने कहा था कि – ''**संस्कृत का मूलाधार आध्यात्मिकता है जो भारत की विश्व को एक अनूठी देन है ।**''

आज सर्वत्र भ्रष्टाचार, स्वार्थपरता आदि का प्रभुत्व दिखाई देता है । मूल्यों का तीव्र गति से ह्रास होता जा रहा है जिससे सांस्कृतिक प्रदूषण का जन्म होता जा रहा है । इस प्रदूषण को दूर करने में संस्कृत भाषा एक सर्वोत्तम भाषा है, जबकि आज इसके पठन–पाठन व हमारी प्राचीन परम्पराओं को उपेक्षित किया जा रहा है । संस्कृत को भूल जाना हमारी अपनी संस्कृति को भूल जाना है । परम्पराओं को भुला देने से समाज अपनी संस्कृति को खो बैठता है । अपनी संस्कृति को जीवन्त बनाए रखने के लिए हमें संस्कृत भाषा का अवलम्बन करना आवश्यक होगा । हमारी सभ्यता एवं संस्कृति संस्कृत ग्रंथों में है । संस्कृत भाषा से संबंध विच्छेद करने से भारतीय संस्कृति कुम्हला (मुरझा) जाएगी ।

इस प्रकार सांस्कृतिक दृष्टि से संस्कृत का महत्व बहुत ही अधिक है ।

PTEC GURWA, SITAMARHI, HAZARIBAG

# संस्कृत भाषा का साहित्यिक महत्व

संसार की समस्त प्राचीनतम भाषाओंमें संस्कृत का सर्वोच्च स्थान है । इसके साहित्य की जो धारा प्राचीन काल में निकल पड़ी थी वह आज भी अविरल गति से प्रवाहित हो रही है । इसका साहित्य अत्यन्त व्यापक है । विश्व साहित्य की प्रथम पुस्तक ऋग्वेद संस्कृत में रची गई है । सम्पूर्ण भारतीय संस्कृति, परम्परा और महत्वपूर्ण राज इसमें निहित है । आचार शास्त्र, व्याकरण शास्त्र, राजनीति शास्त्र, काम शास्त्र, समाज शास्त्र, नाट्य शास्त्र, गद्य, पद्य, चिकित्सा शास्त्र आदि का अक्षय भण्डार संस्कृत साहित्य में भरा पड़ा है ।

**महाकवि भर्तृहरि** ने संगीत और साहित्य से विहीन पुरूष को पशु कहा है (**''साहित्य – संगीत कला विहीनः ''।)** वस्तुतः साहित्य ही किसी देश की संस्कृति रूपी सोने को परखने की कसौटी है । यही समाज का दर्पण है । संस्कृत साहित्य को यदि हमें जानना है तो संस्कृत भाषा की शरण लेनी पड़ेगी । संस्कृत भाषा ही हमारी संस्कृति और सभ्यता का आदि श्रोत है जिसका मूल संस्कृत साहित्य में निहित है ।

काव्य की दष्टि से संस्कृत का स्थान बहुत ऊँचा है । महर्षि वाल्मीकि, व्यास, कालिदास, भवभूति, श्रीहर्ष, माघ, वाणभट्ट, विशाखदत्त आदि महाकवियों की कृतियाँ आज भी उतनी ही नवीन एवं आनन्ददायिनी हैं, जितनी कि वे अपने रचनाकाल में थी । रामायण, महाभारत, रघुवंशम, पंचतंत्र, हितोपदेश आदि ग्रंथ आज भी प्रेरणा प्रदान करते हैं ।

प्रसिद्ध भाषाविद् **अल्वी–रेणु** ने ठीक ही लिखा है कि **''साहित्य के पुस्तकालय में किसी वस्तु का अभाव रह जाएगा यदि वहाँ कालिदास, भर्तृहरि, और भारवि के महाकाव्य विद्यमान न हों''** ।

नाट्यशास्त्र के क्षेत्र में कालिदास का **'अभिज्ञानशाकुन्तलम्'** नाटक तथा भवभूति का **'उत्तररामचरितम्'** करूण रस का सर्वोत्तम नाटक है ।

गद्य साहित्य की दृष्टि से सुबन्धु वाण तथा दण्डी के कार्य विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं । कथा साहित्य की दृष्टि से संस्कृत भाषा अन्य भाषाओं के साहित्य से कहीं आगे है । कथा–सरितसागर, हितोपदेश, पंचतंत्र, मित्रलाभ आदि अनूठे ग्रंथ संस्कृत भाषा में लिखे गए हैं ।

वैदिक साहित्य एवं उसके असंख्य मंत्रों को अपने कंठों में संजोकर एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित करने का काम भगीरथ ने किया ।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि भाषा के द्वारा ही संस्कृत साहित्य का संरक्षण एवं संवर्द्धन हो सकता है ।

**अमेरिका के डॉ. लिडविम स्टरन वैक** ने कहा है – **''संस्कृत साहित्य भारतीय संस्कृति का न केवल प्रतीक मात्र है; अपितु यह तो समस्त संसार की एक निधि है''** ।

भारत ही नहीं विश्व की दृष्टि में भी भारतीय साहित्य का अत्यन्त ही ऊँचा स्थान है । साहित्य की दृष्टि से संस्कृत साहित्य केवल धार्मिक बातों का ही संग्रह नहीं वरन् नाटक, कथा, काव्य, नीति, ज्ञान सभी दृष्टि से संस्कृत साहित्य उत्कृष्ट है ।

PTEC GURWA SITAGARHA HAZARIBAG

# इकाई – 2

# (संस्कृत शिक्षण का स्वरूप)

PTEC GURWA, SINGARHA, HAZARIBAG

# संस्कृत की स्थिति

आजकल संस्कृत की चर्चा सभी जगह हो रही है । एक ओर संस्कृत के अध्ययन को स्कूलों में बढ़ावा देने का प्रयास हो रहा है तो दूसरी ओर संस्कृत पर मृतभाषा का आपेक्ष लग रहा है । संस्कृत एक समय शिष्टजनों के व्यवहार की भाषा रही । भारत में अंग्रेजी के प्रभाव के पहले तक संस्कृत ही विभिनन भाषा–भाषी राज्यो के बीच संपर्क भाषा का काम कर रही थी । संस्कृत भाषा भारत में शिक्षा का माध्यम भी रही है । समस्त भारतीय शास्त्रों का प्रणयन संस्कृत भाषा में हुआ । संस्कृत की शब्दकोश परम्परा की तुलना अन्य भारतीय भाषाओं के शब्दकोशों से हो ही नहीं सकती । संस्कृत भाषा का आधुनिक समाज मे, दैनिक व्यवहार में न **''मातृभाषा''** के रूप में, न ही **''सम्पर्क भाषा''** के रूप में प्रयोग होता है । संस्कृत भाषा का आधुनिक काल में मातृभाषा के रूप में इसका प्रयोग नहीं हो रहा है। यह आपेक्ष समाज में प्रयोगशून्यता को देखकर ही लगा है । अन्यथा कौन–सी दूसरी भारतीय भाषा है जिसपर यह आरोप लगा हो ? कारण इतना ही है कि संस्कृत न तो किसी एक क्षेत्र की संपर्क भाषा ही है और न ही इसे किसी राज्य में राज–काज या शिक्षा का माध्यम ही बनाया गया है ।

यह सच है कि संस्कृत सभी भाषाओं की जननी है । आज संस्कृत और हिंदी के स्वरूपों की तुलना करके देखा जाए, कहीं से भी हिंदी पर संस्कृत की छाप मिलती है ? क्यों हिंदी के माध्यम से संस्कृत पढ़ने वालों को संस्कृत बोलने में दिक्कत होती है ? जो कभी संस्कृत भाषा को समाज में सुना ही नहीं, कभी स्कूल में संस्कृत पढ़कर 10वीं के बाद छोड़ दिया, उस हिंदी भाषा को संस्कृत बोलना तो दूर समझना तक मुश्किल हो गया है । वैदिक–संस्कृत से लौकिक संस्कृत, लौकिक संस्कृत से प्राकृत, प्राकृत से अपभ्रंश और अपभ्रंश से हिंदी का विकासक्रम स्पष्ट दिख रहा है । सामाजिक प्रयोग में संस्कृत भाषा कम–से–कम तीन पीढ़ी दूर रह गई । शब्दकोश की दृष्टि से भले ही संस्कृत का हिंदी एवं अन्य दौर में संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश पीछे छूट गए हैं । भारतीय भाषा–वैज्ञानिक परम्परा में मूलतः संस्कृत भाषा पर विचार किया गया लेकिन उक्त भाषा विषयक विचार अन्य सभी भारतीय उपमहाद्वीप की भाषाओं पर समान रूप से लागू होती है ।

भले ही संस्कृत से आधुनिक भारतीय भाषाओं के विकास में कई स्तर दिख जाएँ, इन सभी भारतीय भाषाओं का उद्‌गम स्रोत संस्कृत को स्वीकारने में किसी को कोई दिक्कत नहीं हो सकती । लकिन जब समाज यह देखता है कि कोई भाषा अपनी परवर्ती पीढ़ियों में प्रेषित ही नहीं हो रही हो, उस भाषा का कहीं गृहभाषा के रूप में या सम्पर्क भाषा के रूप में आधुनिक समय में प्रयोग ही नहीं हो रहा हो, तब समाज या तो उस भाषा को मृत–प्राय कह देती है या अगले स्तर पर मृत कह देती है । हमें दुःख है कि शिष्टों–विद्वानों द्वारा व्यवहृत संस्कृत भाषा की अविरल धारा लुप्त हो रही है । भाषा को सीखने के लिए भी एक परिवेश चाहिए होता है । समाज यदि पूर्ण परिवेश उपलब्ध नहीं कराए, तो शिक्षण संस्थानों की जिम्मेदारो बढ़ जाती है । क्षेत्रीय भाषाओं के माध्यम से संस्कृत पढ़ने पर उसमें निहित विषय का बोध तो हो जाता है, परंतु भाषा का ज्ञान नहीं हो पाता । इस कारण भी संस्कृत के छात्र व अधिकांश नई पीढ़ी के शिक्षक भी संस्कृत बोलने में असमर्थ ही दिखते हैं । फलतः दोषपूर्ण शिक्षण पद्धति के कारण भी संस्कृत द्वितीय भाषा के रूप में भी चिन्तनीय स्थिति में दिख रही है ।

आज संस्कृत–प्रयोग एवं भाषा संप्रसारण का दायित्व संस्कृत के शिक्षकों/आचार्यों और उनके शिष्यों पर ही है । इसके लिए आगे बढ़कर उत्तरदायित्व लेने की आवश्यकता है ।



PTEC GURWA SITAGARHA HAZARIBAG

# संस्कृत और नैतिक शिक्षा

संस्कृत संस्कारों की कृति है । इसके बिना भारतीय संस्कृति निष्प्राण है और यह नैतिक शिक्षा का खजाना भी है । संस्कृत की सूक्तियों एवं महान चरित्र वाले कथाओं से नैतिक शिक्षा प्राप्त होती है तथा इससे युवा पीढ़ी को सन्मार्ग पर लाया जा सकता है । संस्कृत भाषा नैतिक मूल्यों की भाषा है । संस्कृत में उपलब्ध ज्ञान सम्पदा सबके लिए उपयोगी है । प्रत्येक मानव को इसकी शिक्षा दी जानी चाहिए ।

संस्कृत भाषा के माध्यम से विद्यार्थियों को भविष्य के लिए एक बेहत्तर नागरिक बनाने के लिए उनमें भारतीय संस्कृत के भाव और उसकी शिक्षा देना जरूरी है । संस्कृत के द्वारा ही विद्यार्थियों में अपने देश की संस्कृति के प्रति प्रेम पैदा किया जा सकता है । संस्कृत भाषा हमारी संस्कृति के प्रति सम्मान की भावना पैदा करने के लिए एक जादुई स्पर्श का काम करती है ।

आज मानव में नैतिकता का पतन हमारे लिए सबसे बड़ा संकट है । इस समस्या का समाधान केवल नैतिक शिक्षा के माध्यम से ही किया जा सकता है और संस्कृत भाषा अपने आपमें नैतिक मूल्यों से निहित है । संस्कृत का प्रत्येक शब्द अपने आपमें सच्चाई का पाठ है ।

आज बच्चों को प्राथमिक स्तर पर नैतिक शिक्षा देने पर जोर दिया जाता है इसके लिए बच्चों को संस्कृत से जोड़ना होगा, क्योंकि संस्कृत में ही नैतिक मूल्य समाहित है । कहा जाता है कि आज के बच्चे ही कल के भविष्य हैं । उनके चरित्र के बल पर ही देश की प्रतिष्ठा और विकास आधारित है।

अतः विद्यालयो में नैतिक शिक्षा को अवश्य स्थान दिया जाना चाहिए । हम हर कार्य अपनी अन्तरात्मा एवं उच्च आदर्शों को ध्यान में रखकर करें । आज जो संस्कार बच्चों में स्थापित होंगे वो ही आगे चलकर देश, समाज और परिवार के विकास में सहायक होंगे ।

भारतीय संस्कृति, धर्म, नैतिकता, राष्ट्रभक्ति, आध्यात्मिक दृष्टिकोण का विकास एवं जीवन के आदर्शों के अनुरूप बालकों में चरित्र का निर्माण आदि नैतिक मूल्यों को विकसित करने के लिए संस्कृत की शिक्षा अति आवश्यक है ।

PTEC GURWA, SITAGARHA, HAZARIBAG

# इकाई — 6

# (संस्कृत शिक्षण की विधियाँ)

PTEC GURWA,SITAGARHA, HAZARIBAG

## स्वरोच्चारण विधि

इसे अक्षर बोध विधि भी कहते हैं । यह सबसे प्राचीन विधि है । भाषा शिक्षण में उच्चारण का महत्वपूर्ण स्थान है । संसार की सभी भाषाओं के शिक्षण में उच्चारण को प्रधानता दी गई है । किन्तु संस्कृत भाषा शिक्षण में उच्चारण का अद्वितीय स्थान है ।

उच्चारण एक तरीका ह जिसमें कोई भाषा या शब्द विशेष या ध्वनि का निकलना ही उच्चारण के सामान्य अर्थ हैं । इस विधि में संस्कृत वर्णमाला का स्वर एवं व्यंजन सहित पूर्ण ज्ञान क्रमबद्ध ढंग से करवाया जाता है । इसमें अध्यापक एक वर्ण को श्यामपट्ट पर लिखकर उसका उच्चारण कराता जाता है । छात्र वण को देखते हैं और उसका उच्चारण करते हैं । इससे बालक को संस्कृत वर्णमाला के हर वर्ण का ज्ञान हो जाता है और ध्वनियों के शुद्ध उच्चारण की पहचान हो जाती है ।

वर्णों का बोध होने के बाद बालक को वर्णमाला के अक्षरों को जोड़कर शब्द बनाना सिखाया जाता है । जैसे – अजः, गजः, खगः आदि । फिर उस शब्द का उच्चारण अभ्यास भी कराया जाता है । इस विधि में पहले स्वर वर्ण, फिर व्यंजन की पहचान कराने के पश्चात् मात्राओं का ज्ञान कराया जाता है । जैसे – ग् + अ = ग ग् + आ = गा । तत्पश्चात् छात्रों को संयुक्ताक्षरों का भी ज्ञान करा दिया जाता है । जैसे – क्ष – क् + ष ज्ञ – ज् + ञ त्र – त् + र

इस विधि से छात्रों को वर्णमाला का ज्ञान भलीभाँति हो जाता है तथा अपरिचित शब्द को पहचानने में सहायता मिलती है ।

### स्वरोच्चारण विधि के गुण

1. इस विधि से बालकों में संस्कृत के शुद्ध उच्चारण की आदत का विकास होता है ।
2. इससे बालकों में प्रारंभ से ही बोलने की प्रवृत्ति का विकास होता है ।
3. इसके द्वारा संस्कृत भाषा के वर्णों की जानकारी प्राप्त होती है ।

### स्वरोच्चारण विधि के दोष

1. इस विधि से व्याकरण का ज्ञान नहीं हो पाता है ।
2. इस विधि में लेखन पर ध्यान नहीं दिया जाता है ।
3. इस विधि के द्वारा रचनात्मक कार्यों की जानकारी प्राप्त नहीं होती है ।

## अनुकरण विधि

मनुष्य बचपन से ही अनुकरण द्वारा सीखता है । हम लड़के–लड़कियों को किसी भी कार्य को अनुकरण करते हुए देखते हैं । अपनी माता को खाना बनाते देखकर लड़कियाँ भी खाना बनाने का खेल खेलती हैं । क्रिकेट का खेल देखकर लड़के भी गेंद–बल्ले से खेलने लग जाते हैं ।

इस प्रकार हम देखते हैं कि अनुकरण मनुष्य की प्रकृति है और भाषा भी अनुकरण से ही सीखी जाती है । इस विधि में बालक अध्यापक का अनुकरण करके शब्दों तथा वर्णों का उच्चारण करना सीखते हैं । इसमें अध्यापक श्यामपट्ट पर एक वर्ण या शब्द लिखता है और उसे बोलता है तथा छात्र उसका अनुकरण करते हैं । कक्षा शिक्षण के दरम्यिान भी शिक्षक शुद्ध उच्चारण एवं भाव के साथ आदर्श वाचन करते हैं तथा छात्र उसका अनुकरण करते हैं । इस विधि का प्रयोग करते समय शिक्षक को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि उसका उच्चारण शुद्ध हो ।

PTEC GURWA, SIMARHA, HAZARIBAG

**अनुकरण विधि के गुण**

1. इस विधि से बालक भाषा सीख पाते हैं ।
2. यह विधि छात्रों को लिखना सिखाने के लिए प्रयुक्त की जाती है ।

**अनुकारण विधि के दोष**

1. यह विधि प्रारंभिक कक्षाओं के लिए उपयोगी है ।
2. इस विधि के द्वारा बालकों में नकल की प्रवृत्ति बढ़ती है और वे परावलम्बी हो जाते हैं ।
3. इस विधि से छात्र निरर्थक शब्द भी सीख जाते हैं ।

## अभ्यास विधि

यह प्राचीन विधि है । इसमें भाषा के सभी अंगों – श्रवण, उच्चारण, पठन और लेखन का अभ्यास कराया जाता है । प्राचीन युग में स्नान, पूजा–पाठ के उपरांत गुरू अपने शिष्यों को वेद आदि ग्रंथों के पठन पर ध्यान देते थे । इसमें पाठ के अन्तर्गत लय, गति, विराम, शब्दार्थ, व्याकरण आदि पर विशेष ध्यान दिया जाता था ।

इस विधि में पठ के विषय में छात्रों से बार–बार प्रश्न पूछ–पूछकर उनके मस्तिष्क में संस्कृत का ज्ञान भर देते हैं । इस विधि से पढाने से छात्रों की मातृभाषा भी पुष्ट होती है ।

**अभ्यास विधि के गुण**

1. इस विधि में छात्र के भाषण एवं लेखन दोनों कौशल का विकास होता है ।
2. इस विधि से प्रश्नोत्तर हल करने की क्षमता विकसित होती है ।
3. प्रश्न पूछने से छात्रों के ज्ञान का विकास होता है ।
4. इस विधि में जाँच और अभ्यास पर बल दिया जाता है ।

**अभ्यास विधि के दोष**

1. इस विधि के द्वारा छात्रों में नकल करने की प्रवृत्ति पैदा होती है ।
2. छात्रों में सामूहिकता का अभाव होता है ।
3. इस विधि के द्वारा व्याकरण सम्बन्धी तथ्यों की पूर्ण जानकारी प्राप्त नहीं हो पाती है ।

भाषा एक कला है और कला निरन्तर अभ्यास तथा पुनरावृत्ति द्वारा ही सीखी जा सकती है । अतः संस्कृत भाषा का समुचित ज्ञान कराने के लिए भी सतत् अभ्यास एवं पुनरावृत्ति आवश्यक है । यह अभ्यास वाचन, पठन एवं लेखन तीनों रूपों में होना चाहिए । इसके लिए निम्न प्रकार से अभ्यास कराया जा सकता है –

1. कठिन ध्वनियों, शब्दों एवं वाक्यों के उच्चारण का अभ्यास कराना ।
2. व्याकरण संबंधी अशुद्धियों को शुद्ध कराना ।
3. वर्ण–विन्यास संबंधी अशुद्धियों का ज्ञान कराकर उनके शुद्ध रूप का अभ्यास कराना ।
4. संस्कृत गद्य–खण्डों तथा श्लोकों के शुद्धोच्चारण का अभ्यास कराकर उन्हें कंठस्थ कराना ।
5. सरल एवं शुद्ध संस्कृत में भावाभिव्यक्ति में सक्षम बनाना ।

PTEC GURWA, SITAGARHA, HAZARIBAG

# प्रश्नोत्तर विधि

प्रश्नोत्तर विधि द्वारा पाठ्यवस्तु को समझाने का तरीका बहुत प्राचीन है । इस विधि में जिज्ञासा जागृत करना शिक्षक का उद्देश्य होता है । बालक में जिज्ञासा उत्पन्न होने पर वह स्वयं शिक्षक से प्रश्न करेगा और शिक्षक उन प्रश्नों का समाधान करेंगे । आधुनिक शिक्षण–विधि में प्रश्नों का काफी महत्त्व है। प्रश्न छात्रों को उत्प्रेरित करते हैं और वे ज्ञानार्जन के लिए उत्सुक हो जाते हैं ।

## प्रश्नों के उद्देश्य

1. **जिज्ञासा उत्पन्न करना** :– प्रश्नों के द्वारा शिक्षक छात्रों में पाठ्यवस्तु के प्रति अभिरूचि उत्पन्न करता है । इससे छात्रों की रूचि पाठ के प्रति बनी रहती है ।
2. **पूर्वज्ञान की जानकारी** :– इस विधि से छात्रों के पूर्वज्ञान की जानकारी होती है जिसके आधार पर पाठ का विकास होता है ।
3. **ज्ञान की परीक्षा** :– इसके द्वारा छात्रों के ज्ञान की परीक्षा होती है, जिससे यह पता चलता है कि छात्र पाठ को कहाँ तक आत्मसात कर सके हैं ।
4. **कक्षा को क्रियाशील बनाए रखना** :– पढ़ाने के दौरान शिक्षक बीच–बीच में प्रश्न पूछते हैं जिससे छात्र जागरूक बने रहते हैं ।
5. **पुनरावृत्ति के लिए प्रश्न** :– पाठ की पुनरावृत्ति के लिए प्रश्नों को पूछना अत्यावश्यक है ।

## अच्छे प्रश्नों की विशेषताएँ

1. प्रश्न को स्पष्ट और निश्चित होना चाहिए ।
2. प्रश्न संक्षिप्त और सरल हो ।
3. प्रश्न का उत्तर निश्चित तथा सदैव एक हो ।
4. छात्रों में क्रियाशीलता उत्पन्न करे ।
5. प्रश्न तार्किक क्रम में हो ।

## प्रश्न पूछने की विधि

1. प्रश्न पूरे कक्षा को ध्यान में रखकर करना चाहिए ।
2. प्रश्न के बाद उत्तर के लिए कुछ समय देना चाहिए ।
3. उपयुक्त गति से विराम देते हुए प्रश्न पूछना चाहिए ।
4. छात्रों की योग्यता पर ध्यान देना चाहिए । तीव्र बुद्धि के छात्रों से कठिन तथा मंद बुद्धि वाले छात्रों से सरल प्रश्न पूछना चाहिए ।
5. आत्मविश्वास के साथ प्रश्न पूछना चाहिए ।

## उत्तर कैसे दिए जाएँ

1. उत्तर पूरे वाक्य में होना चाहिए ।
2. उत्तर विषय से संबद्ध हो ।
3. जिस छात्र से प्रश्न किया जाए, वही उत्तर दे और दूसरे सुनें ।
4. अध्यापक को ऐसा प्रश्न नहीं पूछना चाहिए, जिसका उत्तर ''हाँ'' या ''नहीं'' हो ।
5. उत्तर देने वाले छात्र की आवाज ऐसी हो, जो पूरी कक्षा में सुनाई दे ।

PTEC GURWA, SITAGARHA, HAZARIBAG